BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

कचरे से लक्ष्य तक: प्लास्टिक की कहानी को फिर से लिख रहे हैं भारतीय शहर

25 सितंबर 2026

एक दशक पहले एक भारतीय बाजार में घूमते हुए, अक्सर एक प्लास्टिक बैग के साथ खरीदारी की जाती थी, जिसे आमतौर पर पॉलिथीन कहा जाता है। इन बैगों में सब्जियां, कपड़े, भोजन और अनगिनत अन्य खरीदारी होती थी।

आज देश भर के बाजार तेजी से प्लास्टिक मुक्त हो रहे हैं। कई खरीदार घर से कपड़े का थैला ले जाते हैं। एक दुकानदार एक पुन: प्रयोज्य विकल्प प्रदान करता है। लोग घर पर सूखे और गीले कचरे को अलग करते हैं। घरों से एकत्र किया गया प्लास्टिक डंपसाइट के बजाय रिकवरी सेंटर में जाता है। इसमें से कुछ अंततः एक नए उत्पाद के रूप में वापस आ सकते हैं। भारत ने सख्त नियमों और बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के साथ अपनी प्लास्टिक कहानी को बदलना शुरू कर दिया। **2 अक्टूबर 2014** को शुरू किए गए **स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम)** ने संग्रह, पृथक्करण और पुनर्प्राप्ति के लिए प्रणालियों को मजबूत किया है। **1 जुलाई 2022** से पहचानी गई एकल-उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

लेकिन यह बदलाव रातों रात नहीं हुआ है और न ही यह अकेले नियमों से आया है। यह छोटी-छोटी आदतों के माध्यम से विकसित हुआ है जो जागरूकता, स्थानीय कार्रवाई और सामुदायिक भागीदारी द्वारा समर्थित है। शहरों और समुदायों में वे दिखाते हैं कि कैसे छोटे परिवर्तन प्लास्टिक की यात्रा को

नया आकार दे सकते हैं। इसके साथ ही वे प्लास्टिक की पूरी क्रिया प्रणाली को समाहित करते हैं कि किस प्रकार इसके इस्तेमाल को कम करें, पुन: उपयोग करें, वापसी, पुनर्प्राप्त करें और पुनः बनाएं।

कम उपयोग करना: बाजार को समाधान का हिस्सा बनाना

एक बाजार वह जगह है जहां एक छोटी सी आदत हर सुबह सैकड़ों बार दोहराई जाती है। त्रिची में नगर निगम ने बाजारों में लगातार एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग से निपटने के लिए 2022 में एक अभियान शुरू किया।

तीन किसान बाजार- **तेन्नूर, केके नगर और वोरैयूर - 220 विक्रेताओं** को शामिल करते हुए गहन जुड़ाव के लिए चुने गए थे। त्रिची सिटी कॉर्पोरेशन ने विक्रेताओं को शामिल किया, एकल-उपयोग प्लास्टिक से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान के बारे में बताया और उन्हें स्थायी विकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। **"थुनिप्पई थिरुविझाई" (क्लॉथ-बैग फेस्टिवल)** पहल ने दुकानदारों को पुन: प्रयोज्य कपड़े के थैलों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। परिणाम बहुत अच्छे रहे थे। तेन्नूर बाजार ने **एक साल में 2,200 किलोग्राम एकल इस्तेमाल प्लास्टिक** की बचत की, जबकि केके नगर ने चार महीने में 620 किलोग्राम और वरैयूर ने छह महीने में 300 किलोग्राम प्लास्टिक की बचत की।

पुन: उपयोग: थैला एटीएम: पुन: प्रयोज्य विकल्प को आसान बनाना

कपड़े का थैला प्लास्टिक बैग का एक सरल विकल्प है, लेकिन इसे रोजमर्रा की खरीदारी का हिस्सा बनाने के लिए आसान पहुंच की आवश्यकता होती है। **महाराष्ट्र के वीटा शहर** में, नगर परिषद (नगर परिषद) ने खरीदारों को पुन: प्रयोज्य सूती बैग की पेशकश करने के लिए भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर पांच **" थैला एटीएम"** स्थापित किए हैं।

इनमें लगी मशीनें वेंडिंग मशीन की तरह काम करती हैं। खरीदार एक सिक्का या नोट डालते हैं और एक कपड़े का थैला प्राप्त करते हैं। **ग्लोबल सिस्टम फॉर मोबाइल कम्युनिकेशंस (जीएसएम)** तकनीक पर निर्मित मशीनें दूर से बैग की उपलब्धता की निगरानी करती हैं और स्टॉक एक निर्धारित स्तर से नीचे गिरने पर परिषद को सचेत करती हैं। यह पहल आजीविका के अवसर भी पैदा कर रही है। स्थानीय **स्वयं सहायता समूहों** की महिलाएं मशीनों के माध्यम से आपूर्ति किए गए बैगों को सिलती हैं। लगभग **6,000 बैग बेचे गए हैं** और साप्ताहिक बाजार में **एक दिन में लगभग 200 थैलों** की बिकी दर्ज की गई है।

वीटा निवासी **मुमताज राजू सैयद के लिए** परिवर्तन व्यावहारिक है: " थैला एटीएम के साथ, मैं अब एक कपड़े का बैग प्राप्त कर सकती हूं, जिससे मेरी खरीदारी आसान हो जाती है।"

मुमताज राजू सैयद

थैला एटीएम महाराष्ट्र में प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है। शहर **बाजार निरीक्षण, जुर्माना, नुक्कड़ नाटकों और सार्वजनिक अभियानों के माध्यम से** जागरूकता के साथ प्रवर्तन को जोड़ रहे हैं। इंदापुर में अधिकारियों ने **25 किलोग्राम प्लास्टिक बैग जब्त किए और 90,000 रुपए का जुर्माना** लगाया। इसके साथ ही समुदाय व्यावहारिक विकल्पों को बढ़ावा दिया जा रहा है। **वर्धा में एक स्वयं सहायता समूह ने 17,000 पेपर बैग वितरित किए**, जबकि कपड़े और जूट बैग को बार-

बार उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ये प्रयास रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक-मुक्त विकल्पों को अधिक सुलभ बनाने में मदद कर रहे हैं।

वापसी: दूध के पाउच लौटाने पर मिलता है प्रतिफल

क्या होगा अगर एक खाली दूध की थैली घर में कुछ वापस ला सकती है? **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में** एक बाय-बैक पहल निवासियों को इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक दूध के पाउच को फेंकने के बजाय वापस करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

इसी योजना के तहत संग्रह बिंदु स्थापित किए गए हैं जहां उपभोक्ता ताजे दूध और छूट सहित पुरस्कारों के लिए इस्तेमाल किए गए पाउच का आदान-प्रदान कर सकते थे। जागरूकता अभियानों ने निवासियों को इसमें हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया और पुनर्चक्रण और जिम्मेदार निपटान के महत्व पर प्रकाश डाला। यह परियोजना अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एकीकृत विकास निगम लिमिटेड (एनीडको) और श्री विजय पुरम नगर परिषद (एसवीपीएमसी) के सहयोग से की गई थी।

यह पहल प्लास्टिक कचरे को एक मूल्य प्रदान करती है और लोगों को एक संरचित प्रणाली के माध्यम से इसे वापस करने के लिए प्रोत्साहन देती है। नवंबर 2024 तक 17,600 दूध के पाउच एकत्र किए गए, जिससे निवासियों को वापसी 352 लीटर दूध का प्रतिफल मिला। यह मॉडल दिखाता है कि कैसे एक साधारण प्रोत्साहन जिम्मेदार अपशिष्ट निपटान को सामुदायिक आदत में बदल सकता है।

पुनर्प्राप्त करें: जहां प्लास्टिक कचरे को दूसरा स्वरूप मिलता है

प्लास्टिक-कचरे के पुनर्चक्रण के माध्यम से बेंगलुरु को हरा-भरा बनाया जा रहा है। **कर्नाटक राज्य प्लास्टिक एसोसिएशन** के अनुसार शहर में प्लास्टिक की खपत **हर महीने प्रति व्यक्ति लगभग 16**

किलोग्राम है। इससे निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की परियोजना **पृथ्वी** फेंके गए प्लास्टिक को दूसरा जीवन देने में मदद कर रही है।

इस कार्यक्रम के तहत सफाई साथियों के लिए 2019 में **स्वच्छता केंद्र नामक एक सामग्री रिकवरी सुविधा** स्थापित की गई थी। केंद्र प्लास्टिक कचरे को छांटता है और इसे **श्रेडिंग और बेलिंग** के माध्यम से संसाधित करता है जिससे संसाधित सामग्री **पुनर्चक्रणकर्ताओं के लिए उपयुक्त** हो जाती है। इस सुविधा ने कोविड-19 महामारी के दौरान **76 सफाई साथियों** को रोजगार भी प्रदान किया। सामाजिक संगठन **हसीरू डाला** द्वारा प्रबंधित, यह केंद्र अपशिष्ट वसूली को आजीविका से जोड़ता है।

प्रसंस्कृत प्लास्टिक का उपयोग **सड़कों, कृषि जल पाइप और फर्नीचर बनाने के लिए किया जाता है**। यह पहल प्लास्टिक कचरे के बोझ को कम करने में मदद करती है और शहरों को स्वच्छ स्थानों में बदलने में योगदान देती है। इसलिए जो एक बार फेंक दिया गया था वह एक उपयोगी सामग्री के रूप में अर्थव्यवस्था में फिर से प्रवेश करता है, जिससे एक **चक्रीय अर्थव्यवस्था** का विचार रोजमर्रा के अपशिष्ट प्रबंधन के करीब आता है।

पुनः निर्माण: बहुस्तरीय प्लास्टिक को टिकाऊ उत्पादों में बदलना

चॉकलेट रैपर और बिस्किट पैकेट से लेकर चिप्स और शैम्पू पाउच तक **मल्टीलेयर्ड प्लास्टिक (एमएलपी)** का व्यापक रूप से रोजमर्रा की पैकेजिंग में उपयोग किया जाता है। ये प्लास्टिक, कागज और एल्यूमीनियम जैसी सामग्रियों की परतों को जोड़ते हैं जिससे उन्हें अलग करना और पुन:चक्रित करना मुश्किल हो जाता है। वर्षों तक इस कचरे में से अधिकांश को लैंडफिल के अलावा कहीं नहीं भेजा जाता था। हालांकि पटियाला ने **प्लास्टिक पुन:चक्रण सुविधा (पीआरएफ)** के माध्यम से कठिनाई से पुन:चक्रित होने वाले कचरे को नया ठिकाना देने का एक तरीका खोजा।

शहर में सीएसआर-समर्थित पुन:चक्रण सुविधा में कम मूल्य वाले प्लास्टिक कचरे को छांटा जाता है, साफ किया जाता है और गुच्छों में काट दिया जाता है। गर्म और ठंडी दबाव युक्त प्रक्रिया से ये गुच्छे चिपबोर्ड में बांध दिए जाते हैं जो प्लाईवुड का एक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है। यह सामग्री फर्नीचर, छत और अस्थायी आश्रयों के लिए काफी मजबूत है और पानी एवं दीमक प्रतिरोधी भी है। एक दिन में **10 टन** की क्षमता के साथ यह सुविधा **75 से 100 चिपबोर्ड** का उत्पादन करती है। यह पहल एक चक्रीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हुए और लैंडफिल कचरे को कम करते हुए कठिनाई से पुन:चक्रित होने वाली प्लास्टिक को एक नया लक्ष्य प्रदान करती हैं।

आगे की राह

स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) स्रोत पृथक्करण, घर-घर से संग्रह, वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रसंस्करण और सामग्री पुनर्प्राप्ति पर केंद्रित है। इन कहानियों से पता चलता है कि कैसे बदलाव स्थानीय स्तर पर शुरू हो सकता है और बाजार किस प्रकार आदतों को बदल सकते हैं। **स्वच्छ भारत मिशन दो** अक्टूबर को बारह साल पूरे कर रहा है, इन कहानियों से पता चलता है कि कैसे स्थानीय कार्रवाई प्लास्टिक की

यात्रा को बदल सकती है। इकाइयाँ अलग-अलग हैं- किलोग्राम, बैग, पाउच और चिपबोर्ड, लेकिन दिशा एक ही है: रोजमर्रा के विकल्पों को स्थायी रूप से परिवर्तित करना।

संदर्भ

आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय

पीआईबी शोध

***

पीके/केसी/आरटी/जेके/ओपी